

« »

:

.

- - - - -
- - - - -
- - - - -

.

:

-

.
.
:

:

:

.

.

()

()

()

- -

- -

:

:

()

:()

()

()

()

()

()

()

()

()

- -

()

-

:()

:

:

- -

- -

:()

:()

:

.

.()
 ()
 ()
 »:
 ()
 ()
 ()
 ()
 ()
 ()
 ()
 ()

()«.

:()

-

-

-

()

()

»

() «...»

:()

()

:()

()

()

:
()

()

()

()

()

:

:()

()

:

()

:()

()

()

()

()

:()

:

()

()

-

:

:

-

()

() :

« » ()

()

« »()

-

()

« »()

:
:()

()

()

()

« »()

()

()

:()

« »()

()

()

:()

« »()

()

()

()

« »()

:()

()

« »()

()

() : () « » ()

() () : () « » ()

() ()

- -

· : ()

() ()

... ()

· ()

· ()

· -

· : () « » ()

· : () « » ()

· () ()

· : ()

· () ()

شب و پیامدهایش در شعر جاهلی

محمود شکیب انصاری^۱، حسن دادخواه^۲

شاعران جاهلی به جهت وابستگی به طبیعت، در سروده‌های خویش به دور از خیال‌پردازی و به‌طور واقع‌بینانه، به توصیف پدیده‌های طبیعی پرداخته‌اند.

از میان پدیده‌های طبیعی، توصیف «شب» در جنبه‌های گوناگون آن، به دلیل نقش‌آفرینی «شب» در زندگی مردمان آن روزگار از جایگاه مهمی برخوردار است.

شاعران دوره جاهلی با به‌کار بردن نام‌های گوناگون، از «شب» یاد کرده‌اند و به تشریح رفتارهای خود در شب و تأثیر روانی این وقت از شبانه روز بر روحيات انسان پرداخته‌اند.

واژگان کلیدی: شب، شعر عربی، دوره جاهلی، شبهای صحرا، یادیاران، مسافرت‌های شبانه

۱. دانشیار دانشگاه چمران اهواز
۲. استادیار دانشگاه چمران اهواز